पर्वतीय क्षेत्रों में सैन्य पृष्ठभूमि
एक अध्ययन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

पर्वतीय क्षेत्रों में सैन्य पृष्ठभूमि

एक अध्ययन

लेखक

डॉ. दीपक कुमार टम्टा

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली नं. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

पर्वतीय क्षेत्रों में सैन्य पृष्ठभूमि

एक अध्ययन

संस्करण : 2021
© लेखक
ISBN: 978-93-90870-55-4

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। आदिल प्रिंटोग्राफिक्स, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा वी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE COPY

पूज्य पिताजी

श्री जीवन लाल टम्टा

एवं

माताजी श्रीमती कमला टम्टा

को सादर समर्पित

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

अनुक्रम

	आमुख	*ix*
1.	उत्तराखण्ड का संक्षिप्त परिचय	1
2.	शोध के उदेश्य एवं शोध प्रविधि	89
3.	प्रवास की सैद्वान्तिक पृष्ठभूमि एवं सैनिक प्रवास	93
4.	सैन्य पृष्ठभूमि के परिवारों का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन	128
5.	भूतपूर्व सैनिकों हेतु कल्याणकारी योजनाएँ	247
6.	सैनिक परिवारों की समस्यायें	284
7.	निष्कर्ष एवं सुझाव	300
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	327

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

आमुख

किसी भी देश अथवा क्षेत्र का विकास वहाँ उपलब्ध मानव शक्ति पर निर्भर करता है मानवशक्ति की गुणवत्ता यथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं प्रशिक्षण इत्यादि कारक विकास को प्रभावित करते है। यदि मानवशक्ति शिक्षित, प्रशिक्षित एवं स्वस्थ होगी तो उसे उत्पादक कार्यो में लगाकर उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। अधिकांश अल्पविकसित देशों की प्रमुख समस्या वहाँ उपलब्ध मानवशक्ति के नियोजन एवं रोजगार से जुड़ी हुई है ऐसे देशों में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में रोजगार का प्रकार एवं स्वरूप भिन्न–भिन्न है तथा दोनों ही क्षेत्रों में अत्यधिक बेरोजगारी पायी जाती है। हमारा देश भारत भी इस समस्या से अछूता नहीं है। हमारे देश में भी ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के मध्य बेरोजगारी के आकार, प्रकार तथा स्तरों में अन्तर होने के कारण श्रम प्रवास जैसी आर्थिक स्थितियाँ जन्म लेती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश श्रमशक्ति कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित व्यवसायों से सघनता से जुड़ी हुई है या गैर कृषि व्यवसाय के रूप में मेहनत मजदूरी से सम्बन्धित कार्यों में संलग्न है। इस प्रकार की श्रमशक्ति अधिकांशतः अकुशल श्रम की श्रेणी में है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों में आवश्यकता से अधिक श्रमशक्ति लगी हुई है तथा कृषि क्षेत्रों में छद्म/बेरोजगारी के स्पष्ट लक्षण दिखाई पड़ते हैं। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों का शिक्षित वर्ग नौकरी व्यवसाय या उद्यम में रूचि दिखाता है इस शिक्षित वर्ग का एक भाग सरकारी सेवाओं में जाने का इच्छुक रहता है जिनमें से कुछ सरकारी सेवायें पा जाते हैं कुछ अन्य निजी संस्थानों में यथा औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्रों में रोजगार पा जाते हैं। कार्य योग्य युवा श्रमशक्ति का एक भाग जो हष्ट पुष्ट व स्वस्थ तथा शारीरिक रूप से मजबूत होता है वह सरकारी सेवाओं हेतु सेना में भर्ती होने का इच्छुक रहता हैं।

हमारा देश 29 राज्यों में विभक्त है जिसमें उत्तराखण्ड 27 वाँ राज्य है जिसका गठन 09 नवम्बर 2000 को हिमालयी राज्यों में 11 वें राज्य के रूप में किया गया, 01 जनवरी 2007 से इसका नाम उत्तरांचल से बदलकर उत्तराखण्ड कर दिया गया, इस राज्य को भी पिछड़े राज्य की श्रेणी में गिना जाता है।

SAMPLE

उत्तराखण्ड का क्षेत्रफल 53,483 वर्ग किमी0 है। राज्य को दो मण्डलों में विभाजित किया गया है कुमाऊँ मण्डल तथा गढ़वाल मण्डल, राज्य के कुल क्षेत्रफल में कुमाऊँ तथा गढ़वाल का भाग क्रमशः 39.33 प्रतिशत एवं 60.67 प्रतिशत है। कुमाऊँ मण्डल 06 जनपदों (अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, नैनीताल, चम्पावत, ऊधमसिंहनगर, बागेश्वर) में विभक्त है तथा 06 जनपदों में से ऊधमसिंहनगर पूर्णतः मैदानी तथा नैनीताल जनपद आंशिक पर्वतीय है। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या 1,0116752 हैं। राज्य में कुमाऊँ मण्डल की जनसंख्या 42,30570 हैं। (नौटियाल, प्रसाद एवं मैठाणी; 2015: 2–3)

उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित व ग्राम प्रधान है। जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि से जुड़ा हुआ है। पर्वतीय क्षेत्र कृषि आधारित व ग्राम प्रधान है तथा इस पर्वतीय क्षेत्र की जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि से जुड़ा हुआ है पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि मुख्य व्यवसाय होते हुए भी कृषिजन्य आय जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त नहीं है। यहाँ की लगभग 70 प्रतिशत कृषि जोतें एक हेक्टेअर से भी कम आकार की हैं। जो सीमान्त कृषक वर्ग की प्रधानता को दर्शाता है कृषि जोतों का आकार सीढ़ीनुमा है जो कि अधिकांशतः असिंचित है कृषि जब निराशाजनक हो जाती है तो प्रवास की दर तेज हो जाती है। यहाँ के पर्वतीय क्षेत्रों की भौगोलिक कठिनाइयों के कारण यहाँ पर उद्योगों की स्थापना नहीं हो पायी है। औद्योगिक क्षेत्र की नगण्यता एवं गैर कृषि रोजगार के अभाव के कारण यहाँ की कार्य योग्य युवाशक्ति देश व प्रदेश के दूसरे मैदानी भागों की ओर आजीविकोपार्जन हेतु प्रवास कर जाती है, प्रायः स्थानान्तरण उन्हीं स्थानों से अधिक दिखायी देता है जहाँ आर्थिक संसाधनों की कमी होती है या उचित तकनीकी ज्ञान एवं पूँजी के अभाव में संसाधनों का विदोहन नहीं हो पाता है।

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से बड़ी मात्रा में लोगों का रोजगार हेतु प्रवास अन्य स्थानों की ओर यथा गाँव से शहर तथा पहाड़ से मैदान की ओर होता रहा है यह प्रवास प्रायः औद्योगिक क्षेत्रों तथा व्यापारिक केन्द्रों की ओर अधिक दिखाई पड़ता है सरकारी सेवाओं के अर्न्तगत रक्षा (सैन्य) सेवाओं में प्रवास अधिक दिखाई देता है रक्षा सेवाओं में होने वाला प्रवास कुमाऊँ के सन्दर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ सरकारी सेवाओं हेतु यहाँ से होने वाला प्रवास मुख्यतः सैनिक प्रवास के रूप में यहाँ के प्रत्येक गाँव में आसानी से दिखाई देता है।

इस पर्वतीय क्षेत्र के साहसी एवं ऊर्जस्वी नवयुवक प्राचीन समय से ही सेना व्यवसाय की ओर उन्मुख रहे हैं। कुछ दशक पूर्व तक यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार की उचित व्यवस्था न होने के कारण ग्रामीण युवक वहाँ पर स्थानीय रूप से उपलब्ध शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त सेना में भर्ती होना पसन्द करता रहा है और यह उसके लिए गौरव का भी विषय भी रहा है क्योंकि सेना व्यवसाय में आकर्षक वेतन, भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, शिक्षा इत्यादि की आकर्षक सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं जिस कारण यहाँ का ग्रामीण युवा वर्ग सेना में भर्ती होना पसन्द करता है इसके अतिरिक्त सेना की नौकरी से सेवानिवृत्त सैनिकों का रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, जीवन यापन का स्तर एवं उपभोग की नई–नई वस्तुएँ इत्यादि कारक भी ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरित करते हैं ये कारक प्रदर्शन प्रभाव के रूप में दिखाई देते हैं।

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र में जीविकोपार्जन के साधनों की तुलना में श्रमशक्ति की अधिकता है। श्रमशक्ति की अधिकता ही यहाँ के लोगों को रोजगार हेतु पलायन को बाध्य करती है। शिक्षा स्तर ग्रामीण क्षेत्रों में औसत दर्जे का होने के कारण अधिकांश लोग सेना व फैक्ट्रियों में सेवा हेतु अपने को उपयुक्त पाते हैं। समय के साथ बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने में यहाँ की कृषि अर्थव्यवस्था असमर्थ रही है, ऐसे पर्वतीय क्षेत्र में द्वितीयक क्षेत्र अर्थात् औद्योगिक क्षेत्र, नगण्य है जिस कारण श्रमशक्ति प्राथमिक क्षेत्र से सीधे तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) में स्थानान्तरित हुई है। अधिकतर श्रमशक्ति नौकरी व्यवसाय को महत्व देती है। नौकरी व्यवसाय में भी प्रथम वरीयता सेना में भर्ती होने की परम्परा रही है। सेना में भर्ती होने से जहाँ एक ओर आर्थिक सुरक्षा प्राप्त होती है वहीं देशभक्ति की भावना को अभिव्यक्त करने की मानसिक सन्तुष्टि भी प्राप्त होती है।

इनसाइक्लोपिडियाँ (wikipedia.org.in) के द्वारा अभिव्यक्त सूचना के अनुसार, भारतीय सेना में 11 लाख 55 हजार सक्रिय कार्मिक तथा 13 लाख 80 हजार 450 रिजर्व कार्मिक है, इस प्रकार कुल 24 लाख 80 हजार 450 कार्मिक सेना में कार्यरत है।(बलोदी; 2010: 35–36)

राज्य सैनिक बोर्ड/जिला सैनिक बोर्ड की सूचना एवं बेबसाइट www.staffnews.in, Dec 2012 के अनुसार भारत में कुल 23,10,699 भूतपूर्व सैनिक हैं इनमें से इंडियन आर्मी में 20,21,987, भारतीय वायुसेना के 1,82,445 तथा इंडियन नेवी के 1,06,267 भूतपूर्व सैनिक हैं तथा उत्तराखण्ड राज्य में 1,21,107 भूतपूर्व सैनिक हैं। (कठोच; 2010)

इस प्रकार अकेले उत्तराखण्ड राज्य में समूचे देश के 5.25 प्रतिशत भूतपूर्व सैनिक है जबकि उत्तराखण्ड की जनसंख्या देश के क्षेत्रफल का मात्र 1.69 प्रतिशत ही है। जनसंख्या की दृष्टि से उत्तराखण्ड में पूरे देश की जनसंख्या का मात्र 0.83 प्रतिशत है।

इस पर्वतीय अंचल में सेना व्यवसाय के प्रति आकर्षण का अन्दाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि समूचे उत्तराखण्ड से वर्तमान में लगभग 1,21,107 भूतपूर्व सैनिक हैं जिसमें से अकेले कुमाऊँ मण्डल में 55,749 भूतपूर्व सैनिक हैं। सैनिक सेवा से सेवानिवृत्त के समय सैनिकों को अच्छी खासी एकमुश्त धनराशि प्राप्त होती है तथा सभी सेवानिवृत्त सैनिकों को पेन्शन भी प्राप्त होती है उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था में पेन्शन का बड़ा योगदान है इसलिए यहाँ की अर्थव्यस्था को मनीआर्डर अर्थव्यवस्था/पोस्ट ऑफिस एवं पेन्शन अर्थव्यवस्था भी कहा जाता है जिसका उपयोग वे पूँजी सम्पत्ति के निर्माण, भू–खरीद, कृषि सुधार, पशुपालन, परिवहन व सूक्ष्म उद्यमों इत्यादि में करते हैं। इस प्रकार की आर्थिक क्रियायों के नवसृजन से स्थानीय स्तर पर आय, रोजगार व उपभोग आदि में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। सेना में सेवारत रहने के दौरान उन्हें देश–विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान व अनुभव प्राप्त होता है तथा कई सैनिक तकनीकी शिक्षा व प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं सेवानिवृत्त के पश्चात ऐसे सैनिक अपने अनुभव व हुनर का लाभ उठाकर सेवानियोजित हो जाते हैं और उनमें से कुछ स्वरोजगार अपना लेते हैं जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निश्चित रूप से परिवर्तन होते है अर्थव्यवस्था में इस प्रकार के उपरोक्त आर्थिक कारक एवं परिवर्तन अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु प्रेरित करते हैं, इसलिए शोधार्थी द्वारा उक्त समस्या को शोध अध्ययन हेतु चुना गया है।

मैं अपनी पुस्तक के लिए पूज्यनीय गुरूवर प्रो. एच.सी जोशी विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग एस.एस.जे परिसर, अल्मोड़ा, प्रो0 पी0एस0 बिष्ट विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, डी0 एस0बी0 परिसर नैनीताल, अर्थशास्त्र विभाग एस.एस.जे परिसर के समस्त प्राध्यापकों एवं सहयोगियों का भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को प्रकाशित करने में मुझे प्रेरित किया।

मैं इस पुस्तक के प्रकाशन में मेरी मदद करने वाले व समय–समय पर मेरा मार्गदर्शन करने वाले सभी मित्रों एवं पुस्तक के प्रकाशक अखण्ड पब्लिशिंग हाउस के सहयोगियों का भी तहे दिल से आभार प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित करने में भाषागत् त्रुटियों को पूर्ण करने का यथासम्भव प्रयास किया गया है तथापि किसी भी प्रकार की त्रुटि हो गयी हो तो मैं सभी पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूँ।

लेखक
डॉ. दीपक कुमार टम्टा

नमूना • SAMPLE